

फ्लू की दवाई हालत को बदतर बना सकती है

वैसे तो जिस अध्ययन की बात कही जा रही है वह यूएस में हुआ है मगर परिणाम भारत में भी लागू हो सकते हैं। अध्ययन बताता है कि फ्लू होने पर बुखार कम करने की दवाइयों का सेवन राहत तो पहुंचाता है मगर साथ ही दिक्कतें बढ़ा भी सकता है।

फ्लू होने पर आम सलाह यही दी जाती है कि पैरासिटामॉल या एस्पिरिन जैसा कोई दर्द निवारक ले लो और तकलीफ से राहत पाओ। फ्लू एक वायरस-जन्य रोग है और स्व-नियंत्रित होता है। दर्द निवारक आम तौर पर बुखार भी कम करते हैं। दिक्कत इसी वजह से हो सकती है। कनाडा के मैकमास्टर विश्वविद्यालय के डेविड अर्न और उनके साथियों की गणनाएं दर्शाती हैं कि यूएस में दर्द निवारक लेकर बुखार कम करने के कारण फ्लू से होने वाली मौतों में 2000 की वृद्धि होती है।

ऐसा माना जाता है कि बुखार वायरस-रोधी होता है। आम तौर पर वायरसों को हमारे सामान्य तापमान (करीब 37 डिग्री सेल्सियस) से ज़्यादा तापमान पर विभाजन करके संख्या वृद्धि करने में परेशानी होती है। इसलिए यदि शरीर का तापमान बढ़ जाए, तो वायरस जल्दी खत्म हो जाता है। अर्थात् व्यक्ति जल्दी चंगा हो जाता है। इसके अलावा शरीर में वायरस संख्या कम रहने से व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्तियों को संक्रमण होने की शंका भी कम हो जाती है।

कुछ अध्ययन पहले भी दर्शा चुके हैं कि बुखार कम करने से बीमारी की अवधि बढ़ती है। बात को और विस्तार से समझने के लिए मैकमास्टर विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं

ने 1982 में फेरेट नामक जीव पर किए गए एक अध्ययन के आंकड़ों का उपयोग किया। फेरेट मनुष्यों में फ्लू के अध्ययन के लिए अच्छा जंतु माना जाता है। इसके अलावा उन्होंने फ्लू महामारियों के आंकड़ों की भी मदद ली।

गणनाओं से पता चला कि यूएस में दर्द निवारकों की वजह से फ्लू के प्रसार में 5 प्रतिशत की वृद्धि होती है। प्रति वर्ष यूएस में करीब 41,000 लोग फ्लू की वजह से मौत के शिकार होते हैं। इसका मतलब है कि दर्द निवारकों के उपयोग की वजह से 2000 तक मौतें होती हैं।

मैकमास्टर दल का मत है कि वास्तविक संख्या उनकी गणना से ज़्यादा भी हो सकती है। उन्होंने अभी तो सिर्फ इस बात का हिसाब लगाया है कि दर्द निवारक की वजह से किसी व्यक्ति में वायरस संख्या और बीमारी की अवधि पर क्या असर पड़ता है। इसमें यह जोड़ना बाकी है कि दर्द निवारक लेकर व्यक्ति बेहतर महसूस करता है और समय से पहले ही दफ्तर या स्कूल पहुंच जाता है जबकि अभी वह वायरस का प्रसार कर सकता है। इस कारण ज़्यादा लोगों को वायरस संक्रमण की संभावना बढ़ती है।

अभी इस अध्ययन के आधार पर चिकित्सा सलाह शायद नहीं बदलेगी क्योंकि अभी भी यह स्पष्ट नहीं है कि क्या बुखार कम रखने से वायरस की संख्या बढ़ती है। कई चिकित्सा विशेषज्ञ मानते हैं कि दर्द निवारक सुरक्षित हैं और फ्लू की रोकथाम में मददगार हैं। हां, इतना ज़रूर कहा जा सकता है कि फ्लू होने पर घड़ल्ले से दर्द निवारक और बुखार-रोधी दवाइयां खाना ज़रूरी नहीं है। (स्रोत फीचर्स)